सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

रचनाकार
ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्'

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरुवर अहो, मम स्वरूप दर्शाय।
किया परम उपकार मैं, नमन करूँ हरषाय।।
जब मैं आता आप ढिंग, निज स्मरण सु आय।
निज प्रभुता मुझमें प्रभो, प्रत्यक्ष देय दिखाय।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जब से स्व-सन्मुख दृष्टि हुई, अविनाशी ज्ञायकरूप लखा।
शाश्वत अस्तित्व स्वयं का लखकर जन्म-मरण भय दूर हुआ।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निज परम तत्त्व जब से देखा, अद्भुत शीतलता पायी हैं।
आकुलतामय संतप्त परिणति, सहज नहीं उपजायी हैं।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निज अक्षय प्रभु के दर्शन से ही, अक्षय सुख विकसाया हैं।
क्षत-भावों में एकत्वपने का, सर्व विमोह पलाया हैं।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निष्काम परम ज्ञायक प्रभुवर, जब से दृष्टि में आया हैं।
विभु ब्रह्मचर्य रस प्रकट हुआ, दुर्दान्त काम विनशाया हैं।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हुआ निमग्न तृप्ति-सागर में, तृष्णा-ज्वाल बुझाई है।
क्षुधा आदि सब दोष नशे, वह सहज तृप्ति उपजाई है।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ज्ञान-भानु का उदय हुआ, आलोक सहज ही छाया हैं।
चिर मोह-महातम हे स्वामी! क्षणभर में सहज विलाया हैं।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

द्रव्य-भाव-नोकर्म-शून्य चैतन्य प्रभू जब से देखा।
शुद्ध परिणति प्रकट हुई, मिटती पर-भावों की रेखा।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अहो! पूर्ण निज वैभव देखा, नहीं कामना शेष रही।
निर्वांछक हो गया सहज मैं, निज में ही अब मुक्ति दिखी।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निज से उत्तम दिखे न कुछ भी, पाई निज अनर्घ्य माया।
निज में ही अब हुआ समर्पण, ज्ञानानन्द प्रकट पाया।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

(दोहा)

ज्ञान-मात्र परमात्मा, परम प्रसिद्ध कराय।
धन्य आज मैं हो गया, निजस्वरूप को पाय।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

देव स्तवन

चैतन्य में ही मग्न हो, चैतन्य दर्शाते अहो।
निर्दोष श्री सर्वज्ञ प्रभुवर जगतसाक्षी हो विभो।।
सच्चे प्रणेता धर्म के, शिवमार्ग प्रकटाया प्रभो।
कल्याण वांछक भविजनों के, आप ही आदर्श हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

देव स्तवन

शिव-मार्ग पाया आपसे, भवि पा रहे अरु पायेंगे।
आराधना से आप-सम ही, हुए, हो रहे, होयेंगे।।
तब दिव्यध्वनि में दिव्य आत्मिक भाव उद्घोषित हुए।
गणधर गुरु आम्नाय में शुभ शास्त्र तब निर्मित हुए।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शास्त्र स्तवन

निर्ग्रन्थ गुरु के ग्रन्थ ये नित प्रेरणाएँ दे रहे।
निजभाव अरु परभाव का शुभ भेदज्ञान जगा रहे।।
इस दुषम भीषण काल में जिनदेव का जब हो विरह।
तब मात-सम उपकार करते शास्त्र ही आधार हैं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गुरु स्तवन

जग से उदास रहें स्वयं में, वास जो नित ही करें।
स्वानुभवमय सहज जीवन मूलगुण परिपूर्ण हैं।।
नाम लेते ही जिन्हों का, हर्षमय रोमांच हो।
संसार भोगों की व्यथा, मिटती परम आनन्द हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गुरु स्तवन

परभाव सब निस्सार दिखते, मात्र दर्शन ही किये।
निजभाव की महिमा जगे, जिनके सहज उपदेश से।।
उन देव-शास्त्र-गुरु प्रति, आता सहज बहुमान हैं।
आराध्य यद्यपि एक ज्ञायक भाव निश्चय ज्ञान हैं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

प्रभु-अर्चना के काल में भी, भावना ये ही रहे।
धन्य होगी वह घड़ी जब परिणति निज में रहे।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला-अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अहो! कहाँ तक मैं कहूँ,
महिमा अपरम्पार।
निज स्वभाव में मग्न हो,
पाऊँ पद अविकार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु